E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 2 | February 2025

राज मोहन झाक चेतन-स्मृति

राहुल राज गुप्ता
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सारांश:

राज मोहन मैथिली साहित्यक एकटा महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि। साहित्यिक विधाक हेतु संरचना संबद्ध चुनौती प्रस्तुत करैत ओ समाजमे परिवर्तन आधारित अनुभव द्वारा विशिष्टताक संग रचना संसारमे संवृद्धि कएलनि। हिनक रचना प्रक्रिया समकालीन अन्य साहित्यकार लोकनिसँ भिन्न अछि। विशेष कए हुनक समग्र रचना शहरी परिवेशक चारुकात घूमैत अछि। जीवन ओ जगतक उहापोहक जतेक मनोविश्लेषित हिनक रचनामे अछि से अन्यत्र नहि भेटैछ। विषय-वस्तुक संक्षिप्तता, तकर उपस्थापनक क्रममे बिना ककरो संबोधित करैत संबोधनक निरंतरता तथा शिल्पक प्रति अतिशय सतर्कता हिनक रचना सभमे देखल जा सकैत अछि। प्रायः सभ कथामे राज मोहन झा स्वयं रहितहिटा छथि वा तँ द्रष्टाक रुपमे 'ओ' आकि भोक्ताक रुपमे 'हम'। संवेदनाक निरुपण ओ विषय-वस्तुक उपस्थापन-कौशलक दृष्टिसँ राज मोहन झा अपन समस्त सहयात्री कथाकार सभमे फराक ओ बेछप लगैत छथि। सघन ओ विरल मानवीय संवेगक अत्यन्त सुकुमार मानसिक वृत्ति सभपर आधारित हिनक कथाक फलक छोट तँ अछि, मुदा तकर फरीछ ओ कलापूर्ण रेखांकन चमत्कृत करएवला होइत अछि। वैयक्तिक ओ सामाजिक धरातल पर पड़ैत अर्थतंत्रक प्रभावमे बनैत-बिगड़ैत मध्यवर्गी संबंध तथा राग-उपराग ओ अपन सीमित सामर्थ्य पर झखैत ओहि वर्गक प्रकृति चेतना राज मोहन झाक वर्गीय चेतनाक संग अत्यन्त आत्मीय संबंध रखैत अछि। राज मोहन झाक अपन विषय-वस्तुक प्रति उत्कट आत्मराग, भाषाक स्पन्दन ओ सचेष्ट मोन संग तरासल शिल्पक मनोरम छटा अधिकांश कथामे देखल जाइत अछि। गप्पक ढंगक संग यथार्थक कथा कएनिहार राज मोहन झा अपन 'कथ्य'सँ बेसी तकर प्रस्तुतिक प्रति साकांक्ष रहैत छथि।

बीज शब्द: मनोविश्लेषणात्मक, तरासल-शिल्प, मानवीय संवेग, उपस्थापन-कौशल, शहरी-परिवेश।

प्रस्तावना :

राज मोहन झाक जन्म मिथिलाक कुमर बाजितपुर (वैशाली) मे सुभद्रा झा व हरिमोहन झाक पुत्रक रुपमे गोपाल जीक 27 अगस्त 1934 ई० मे भेल छलनि। राज मोहन झा मैथिली साहित्यमे एकटा उच्च स्थान प्राप्त कथाकार छथि। मैथिली साहित्यक इतिहासमे इएह एकटा एहन परिवार अछि जे तीन पुश्तधरि मैथिलीक सेवामे लागल रहलाह आ तीन-तीन व्यक्ति साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत भेलाह।

मैथिलीक आधुनिक कालक प्रथम उपन्यासकार पण्डित जनार्दन झा 'जनसीदन' हिनक पितामह छलाह। प्रो० हरिमोहन झा दर्शनशास्त्रक प्रोफेसर होइतहुँ अपन सम्पूर्ण ऊर्जस्वितासँ मैथिलीक विभिन्न विधाकेँ नव दिशा ओ नव स्वरुप देबएमे सफल भेलाह। हिनक उक्ति वैशिष्ट्य अनेक साहित्यकार अनुकरण करबाक प्रयास कएलनि, मुदा केओ हुनका स्तरधरि नहि पहुँचि सकलाह। हिनक 'जीवन यात्रा' नामक पोथीकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार मरणोपरांत वर्ष 1985 ई० मे देल गेलनि। हरिमोहन बाबूक पुत्र राज मोहन झा ओ मनमोहन झा भेलाह। दुनू गोटे साहित्य रचना दिस अपन पिताक प्रेरणासँ प्रेरित भेलाह। मनमोहन झा तँ मात्र कथाक क्षेत्रमे अपन लेखनी चलौलनि ओ साहित्य अकादेमी

सम्मानसँ सम्मानित भेलाह। राज मोहन झा सेहो आरम्भमे कथेक माध्यमसँ मैथिली साहित्यमे प्रवेश कएल, मुदा ओ उचित वक्ता ओ ठाँहि-पठाँहि बाजएवला छलाह, जाहि कारणेँ हुनका मैथिलीक गोलैशी एक्कोरत्ती पसिन नहि रहनि। मैथिलीक विभिन्न संस्था द्वारा भए रहल पक्षपात सभक ओ घोर विरोधी छलाह। तेँ ओ आलोचना सेहो लिखए लगलाह, मुदा साहित्य अकादेमी सम्मान हिनका कथा-संग्रह पर भेटल छनि।

राज मोहन झाक पारिवारिक नाम गोपाल ओ साहित्यिक नाम राज मोहन झा अछि, मुदा मित्र मण्डलीक बीच 'भाइ साहेब'क नामसँ विख्यात् छथि। एहि सभक अतिरिक्त हिनक असली वा वैधानिको नाम राज मोहन झा सएह छलनि। राज मोहन झा बीसम शताब्दीक सातम दशकक अग्रगण्य कथाकार छलाह। ओ अपन वएसक प्रायः चालिस वर्षधरि कथाक रचना करैत रहलाह। आरम्भमे ओ मैथिली एवं हिन्दीमे रचना करब प्रारम्भ कएलनि। पूर्वमे हिनक रचनामे शहरी परिवेशक चित्रण होएबाक कारणेँ ओकरा लोक कथा मानए लेल तैयार नहि छल। किछु लोक देशी शब्दक अभाव ओ किछु दाम्पत्य जीवनक चित्रणक आरोप लगाए हुनका कथाकार मानए लेल तैयार नहि छल। पश्चात् हिनक दीर्घ कालिक रचनाशीलता ओ अजस्र रचना देखि ई सभ धारणा स्वतः छिन्न-भिन्न भए ध्वस्त भए गेल। मैथिली साहित्यमे ई शताधिक कथा लिखने छथि। सभ कथामे ई अपन मनोविज्ञानक ज्ञानक भरपूर उपयोग कएने छथि। जाहि कारणेँ हिनक कथा सभमे मानवीय द्वन्द्व ओ जटिलताकेँ स्पष्ट करबामे समर्थ भेल छथि। भाषाक संवेदनशीलता हिनक कथाक प्राणशक्ति कहल जा सकैत अछि। कथाकार कथाक आधुनिक शिल्प ओ परिवेश ग्रहण करितहुँ मैथिलीक अपन अभिव्यक्ति आ मिथिलाक माटि-पानिक सुगन्धिकेँ नहि त्यागल अछि।

मैथिली कथा विधामे वास्तविक रुपसँ बूझल जाए तँ आधुनिक कालक आरम्भ 1960 ई० क बादे भेल। कारण-एकर बादहि समाजक वास्तविक ओ मनोवैज्ञानिक चित्रण होएब मैथिली कथामे प्रारम्भ भेल। अर्थात् 'कथा-उपन्यास'मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होबए लागल छल। एकरा सम्बन्धमे डॉ० अमरेश पाठक एवं मोहन भारद्वाज मैथिली कथा-संग्रहक भूमिकामे लिखैत कहैत छथि- ''आधुनिक कथाक मूल तत्व अछि समाजवादी एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण । मार्क्स एवं फ्रायड सम्प्रति समस्त साहित्यक प्रेरणास्त्रोत छथि। मैथिलीक आधुनिक कथा हिनक प्रभाव-परिधिक बाहर नहि अछि। वर्तमान भौतिकवादी युगमे यथार्थक प्रति अतिरिक्त रुपसँ साकांक्ष रहब हमर स्वभाव भऽ गेल अछि। वैज्ञानिक आविष्कार समस्त रहस्यक उद्घाटन एहि रुपमे कऽ देलक अछि जे वस्तुक मोहकता समाप्त भऽ गेलैक अछि।''[1]

मैथिली साहित्यमे मायानन्द मिश्र, सोमदेव, धीरेन्द्र, रमानन्द रेणु, उग्रानन्द, हंसराज, रामदेव झा, इन्द्रकान्त झा, लिली रे, बलराम, साकेतानन्द, राज मोहन झा, धूमकेतु, ललित, प्रभास कुमार चौधरी, प्रभृति अनेक कथाकार विशिष्ट रचनाकारक रुपमे ख्यात् छथि। राज मोहन झा मनोविज्ञानसँ एम०ए० कएलाक बाद नियोजन विभागमे नौकरी पकड़ि लेलनि, मुदा लिखबाक क्रम कॉलेजमे गेलाक बादे आरम्भ भए गेल छल।

हिनक पहिल रचना कविता 1957 ई० मे 'पल्लव' नामक पत्रिकामे छपल छल। ओ कविता बेसी नहि लिखि सकलाह आ शीघ्रहि कथामे प्रवेश कएलनि। राज मोहन झा धुरझाड़ कथा लिखलनि। हिनक पहिल कथा-संग्रह 1965 ई० मे 'एक आदि: एक अन्त' आएल। जकर कथा सभ हिनका एकहिबेरमे मैथिलीक प्रथम पाँतीक कथाकारक रुपमे स्थान दए देलक। वर्ष 1972 ई० मे हिनक दोसर कथा-संग्रह 'झूठ-साँच', 1984 ई० मे 'एकटा तेसर' हिनक तेसर कथा-संग्रह अछि। 1993 ई० मे चारिम कथा-संग्रह 'आइ काल्हि परसू', 1996 ई० मे पाँचम कथा-संग्रह 'अभियुक्त,

निष्कासन, विस्थापित, इत्यादि-इत्यादि' प्रकाशित भेल छल। एकर अतिरिक्त कतेको कथा अनेक पत्र-पत्रिकादिमे छिड़िआयल अछि, तकरा संगृहीत करबाक आवश्यकता अछि।

राज मोहन झा जहिया कथा लेखनक क्षेत्रमे उतरलाह, तहिया एकसँ एक विलक्षण प्रतिभाधर अपन-अपन कलाक कौशल देखा रहल छलाह। तहिया मैथिली कथाक स्वर्णयुग चलि रहल छल। हिनकासँ वरिष्ठ मणिपद्म, सुधांशु 'शेखर' चौधरी एवं शैलेन्द्र मोहन झा आ समकालीन कथाकार ललित, राजकमल चौधरी, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, धूमकेतु, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी व गुंजन प्रभृति सभ एक पर एक मानक कथाक पथार लगा रहल छलाह, तँ एहि प्रतिभापुंजक मध्य अपनाकेँ बेरायब, स्थापित करब, अपन श्रेष्ठताकेँ सिद्ध करब आ तकरा स्थापित करब साधारण सामर्थ्य नहि छल। कहल जाइछ जे एक दिस अपन पिताक प्रभाव क्षेत्रसँ मुक्त भेलाह, तँ दोसर दिस समान दृढ़ताक संग अपन समकालीन रचनाकारक मध्य प्रतिस्थापित आ सुप्रतिष्ठित भए गेलाह। एहि मादें डॉ० भीमनाथ झा लिखलनि- ''एहि प्रतिष्ठाक अर्जन कालखण्डमे नव-नव वस्तुकेँ आत्मसात कऽ रहल छल, एकपर एक विलक्षण शिल्पक साँचमे सरियाकऽ तैयार भऽ रहल छल। राज मोहन झा एतहु अनुकरणक प्रवृत्तिकेँ विश्लेषित करैत मस्तिष्ककेँ झिकझोड़ऽवला कथा रचऽ लगलाह। ताही अर्थमे बुझबाक थिक जे ई जे बाट पकड़लनि से सपाट भेटलनि।''[2]

राज मोहन झा एकटा सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति ओ मैथिली साहित्यक अँखिगर साहित्यकार छलाह। हिनक कथा सभक अध्ययन अनुशीलन कएलासँ ई बात अवश्य स्पष्ट होएत जे कथाक लेल एकटा सहज अनुभूति प्रस्तुत करबामे ई सफल भेलाह अछि। हिनक कथानकक चयन अन्य कथाकारसँ भिन्न अछि। हिनक रचनामे जीवनक विसंगति, बालमनक ग्राह्य शक्ति, संघर्ष, घटनाक सहजता, कथाक पारदर्शिता स्वतः प्रकट होइत अछि। ई कोनहुँ वाद वा परम्परामे स्वयंकेँ आबद्ध नहि कएलनि आ ने अपन कोनो वादक प्रतिपादन कएल। प्रांजलता हुनक कथा सभमे मुख्यरुपसँ मानवताक निरुपण भेल अछि। भाषाक प्रांजलता हिनक कथाक सौन्दर्यमे वृद्धि करैत अछि। हिनक रचनामे मुख्य रुपसँ कथामे मध्यवर्गक प्रतिनिधित्व भेटैत अछि।

मध्यम आ निम्न मध्यवर्गमे आधुनिक जीवन शैलीसँ उपजल तनाव हिनक कथाक मूल उत्स अछि। ई अपन कथा सभमे आमलोकक परिवार ओ जीवनमे प्रतिदिनक घटयवला घटनाकेँ जीवन्त आत्म कथात्मक शैलीमे व्यक्त कएने छथि। हिनक प्रत्येक कथा मानव मात्रक अनुभूतिक क्षणसँ निःसृत अछि तैँ पाठककेँ ओहिमे अपन प्रतिबिम्ब देखबामे आबि जाइत अछि। आर्थिक दृष्टिसँ कमजोर व्यक्तिक चित्रण करबाकाल जाहि प्रकारक विश्लेषण हिनक रचनामे भेटैत अछि ओ हृदयतंत्रकेँ झकझोड़ि दैत अछि। दैनिक जीवनक नोक-झोंककेँ अपन मनोवैज्ञानिक ताना-बानामे अपन प्रतिभाक माटि-पानि दए कथा गढ़ैत छथि आ ओ जीवनक कथानकक निर्माण कए कथाक स्वरुप प्रदान करैत छथि। जहिना ओ व्यवहारिक जीवनमे स्पष्टवादी छथि ओहने स्पष्ट विचारधारा हुनक कथा सभमे सेहो भेटैत अछि। सामान्यो घटनाकेँ चित्रण करबाकाल ओकरामे ततेक गंभीर भाव भरि दैत छथि जे पाठकक हृदयपर ओ अमिट छाप छोड़ि दैत अछि। इएह हिनक कथाक सभसँ पैघ वैशिष्ट्य अछि।

आधुनिक सोच-विचार आ नव-नव फैशन सभसँ अवगत रहैत छलाह। एतबे नहि गीत-संगीत आ विभिन्न कलामे रुचि रखनिहार पारखी, मुदा खास कए तलत महमूदक गाओल फिल्मी सभ तरहक गीत-गजलक रेकॉर्ड आ टेप्पसँ हुनक घर भरल रहैत छल। तलत महमूदकक राज मोहन झा तँ दिवाना भए गेल छलाह। मनोविज्ञान ओ साहित्यमे हुनक अध्ययन बहुत व्यापक छलनि। राज मोहन झाक आलोचना-दृष्टि मैथिली साहित्यमे सेहो एकटा अमूल्य निधिक रुपमे देखल जाइत अछि। हिनक आलोचनात्मक निबन्ध चारिटा पोथी प्रकाशित अछि। पहिल 'गल्तीनामा'

(1983) मे प्रकाशित भेल। दोसर पोथी 'टिप्पणीत्यादि' (1992), तेसर 'भनहि विद्यापति' (1992) आ चारिम 'प्रसंगतः' (2001) मे प्रकाशित अछि। एकर अतिरिक्तो अनेक संग्रह योग्य आलोचनात्मक निबंध, टिप्पणी, समीक्षा, संस्मरण, व्यक्ति परक आलेख आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि, जकर अलग-अलग विधाक पोथीक रुपमे संकलन करबाक बेगरता छैक।

राज मोहन झा साहित्यिक समालोचक नहि ओ सामाजिक समालोचक रहलाह। सामाजिक कुव्यवस्थाक प्रति सदति ओ अपन कर्तव्य-पालन करैत रहलाह। ओना तँ समाजक प्रत्येक व्यक्तिक ई दायित्व होइत अछि जे एहन चीजक ओ प्रतिरोध करए। प्रतिरोधक अर्थ कलह वा मारि-पीट नहि अपितु ओ सिद्ध कएलनि जे 'कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगानेवाली, दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगानेवाली' अर्थात् ओ समाजकेँ जगएबाक प्रयास कएलनि। इएह कारण अछि जे ओ आलोचना लिखलनि अनेक संस्थाकेँ ओ समक्ष अनलनि। एहि लेल ओ साहित्य अकादेमी ओ विद्यापति पर्वपर अनेक आलेख लिखलनि। राज मोहन झा साहित्य अकादेमी एवं एकर कार्यप्रणाली तथा प्रतिनिधिसँ ओ बहुत अधिक असंतुष्ट रहैत छलाह, तैँ 'साहित्य अकादेमीमे मैथिली आ हमर मैथिली प्रतिनिधि' शीर्षक निबन्धमे प्रतिनिधि लोकनिक अज्ञानता पर प्रश्न उठौलनि अछि। कारण प्रत्येक प्रतिनिधि अपन पूर्ववर्ती प्रतिनिधिकेँ दोषी मानैत छथि।

'मैथिलीयोमे सार्त्र जनमि सकैत अछि' शीर्षक निबन्धमे आलोचक राज मोहन झाक हार्दिक वेदना प्रस्फुटित भेल अछि। जे कोना मैथिलीक भेटएवला पुरस्कार आ सम्मानमे राजनीति आ चकल्लसबाजी चलैत अछि। एहि दिस ध्यान आकृष्ट करैत दुःख व्यक्त कएलनि अछि। 'प्रश्न लेखनक प्रासंगिताक'क सम्बन्धमे जानकारी देबाक प्रयास कएलनि अछि। लेखकक चिन्ता हुनकहि शब्दमे देखल जा सकैत अछि- ''आइ मैथिली साहित्यमे आलोचना लेखकक पूर्ण अभाव अछि तैँ एहि अभावकेँ जतेक शीघ्रपूर्ण कएल जाय ततेक बढ़िया एहि तरहक समालोचना विशुद्ध साहित्यिक दृष्टिएँ होएबाक चाही।''[3]

'भनहि विद्यापति' शीर्षक आलेखक माध्यमसँ ओ कहए चाहलनि अछि जे मात्र 'भनहि विद्यापति' गओलासँ कोनो लाभ नहि अपितु एहि नामपर एकजुट भए मैथिलीक विकासक मार्ग प्रशस्त करबाक प्रयास करैत रहबाक चाही। 'विद्यापति पर्व-समारोह आ हम सभ' शीर्षकमे ओ विद्यापति-पर्वकेँ मैथिली भाषा एवं साहित्यक विकासक लेल मनाओल जएबाक बात कहलनि अछि। लेखकक शब्दमे- ''मैथिली संस्था सभ जँ अपन दिशा ताकि लए आ तद्नुरुप अपन चरित्रक निर्माणक रचनात्मक कार्यमे लागि जाय, तँ विद्यापति पर्व-समारोहकेँ हम सभ कतेक पैघ सार्थक भूमिका दऽ सकैत छी, सोचल जा सकैत अछि।''[4]

राज मोहन झाक आलोचनात्मक निबन्ध सभ कोनो साहित्यक व्याख्या नहि करैत अछि। अपितु ओ समाजक मार्गदर्शन करैत अछि। हिनका मैथिली आ मिथिलाक चिन्ता छनि। तैँ साहित्य अकादेमीसँ लए स्वतंत्र संस्था सभक कार्य शैलीक बखिया उधेरि नव बाट देखएबाक प्रयास कएलनि अछि। राज मोहन झा मिथिला आ मैथिलीक सशक्त सिपाही छलाह। ओ मैथिली विकासक लेल बनल संस्था सभसँ प्रसन्न रहैत छलाह। मुदा ओहिमे जे जतियारय घुसि जाइत अछि, ताहिसँ हुनक मोन खिन्न भए जाइत छनि। साहित्य अकादेमी जे भारतक साहित्यिक शीर्षस्थ संस्था अछि। जकर एकटा गरिमा होइत छैक। मुदा ओकरहुँ परामर्शदातृ समितिक सदस्यलोकनि अपन निष्ठा बना कए नहि राखि पबैत छथि।

निष्कर्ष :

कहल जा सकैत अछि जे कथाकार राज मोहन झा अपन छोट-छोट प्रसंगक माध्यमसँ रुचिकर कथा सभक रचना कए मैथिली साहित्यमे विशिष्ट स्थान सुरक्षित कएने छथि। कथा हो वा आलोचना दुनू मैथिलीक नव स्वादक आस्वाद करबैत अछि। कथा जतय आधुनिकताकेँ लेने शहरी परिवेशक चतुर्दिक चकभाउर करैत नव-नव विषय वस्तुक साक्षात्कार करबैत अछि तहिना हुनक आलोचनात्मक निबन्ध सभ एकटा नव प्रतिमान स्थापित करैत अछि। ई जतेक निबन्ध लिखल ओ मैथिल समाजक लेल हितकारिये रहल अछि, मुदा ईर्ष्यालुक लेल ओ निरर्थके अछि। हिनक प्रायः सभ विधाक रचनामे अभिव्यंजनात्मक, चित्रमयतापूर्ण अथवा प्रतीक आ बिम्ब प्रस्तुत करएवला भाषा निर्मित अछि। इएह कारण अछि जे हिनक भाषा शैलीमे अद्भूत प्राणवत्ता देखबामे अबैत अछि। तैं राज मोहन झा मैथिली साहित्यक अँखिगर साहित्यकार छलाह। जाहि कारणेँ हुनका मैथिलीक प्रत्येक क्रियाकलाप ध्यान रहैत छलनि। ओ एकटा कर्मठ आ सचर कार्यकर्ता छलाह संगहि सतत् मैथिली गोलैसीकेँ विरुद्ध स्वर उठबैत रहलाह। अपन जीवनमे नौकरी पेशाक बाद जे समय बचलनि तकर क्षण-क्षणक उपयोग मैथिली साहित्यक लेल समर्पित कए देने छलाह। कोनो कथा-संग्रह होइ वा कविता-संग्रह किंवा निबंध-संग्रह ओ सभमे पहिने विभिन्न साहित्यकारसँ पत्रक माध्यमसँ विचार-विमर्श कएलाक उपरान्त अन्ततः उत्कृष्ट कोटिक संकलन प्रकाशित होइत छल। एहि कारणेँ तँ ओ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यमे 'भाइ साहेब'क नामसँ ख्यात भेलाह। सभ हुनका ठाँहि-पठाँहि उक्तिक कारणेँ साहित्यक लेल गुटनिरपेक्ष कहैत छलनि। ओ सतत् साहित्यमे चर्चित विश्लेषित होइत रहताह।

सन्दर्भ स्रोत:-

1. भारद्वाज, मोहन एवं अमरेश पाठक (सं०), कथा-संग्रह, भूमिका, मैथिली अकादमी, पटना, पृ० 6.
2. झा, डॉ विश्वनाथ (सं०), विदेह, चन्द्रधारी मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, वार्षिक पत्रिका-2019, अंक-5, पृ०- 49.
3. झा, राज मोहन, टिप्पणीत्यादि, 1992, वाग्मिता प्रकाशन, पटना, पृ०- 10.
4. झा, राज मोहन, भनहि विद्यापति, 1992, वाग्मिता प्रकाशन, पटना, पृ०- 53.